मासिक पाठ्यक्रम

अप्रैल–जून	स्पर्श –	दुख का अधिकार रहीम के दोहे
	संचयन –	गिल्लू
	व्याकरण –	अनुस्वार–अनुनासिक, उपसर्ग–प्रत्यय
जुलाई	स्पर्श –	एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा आदमीनामा
	संचयन –	स्मृति
	व्याकरण –	शब्द और पद, शब्द–विचार
अगस्त	स्पर्श –	तुम कब जाओगे अतिथि रैदास के पद
	व्याकरण –	वाक्य–विचार (अर्थ के आधार पर)
सितंबर		पुनरावृत्ति
अक्तूबर	स्पर्श –	धर्म की आड़ एक फूल की चाह
	संचयन –	दिए जल उठे
	व्याकरण –	समास
नवंबर	स्पर्श –	शुक्रतारे के समान अग्नि पथ
	संचयन –	हामिद खाँ
	व्याकरण –	वाक्य (रचना के आधार पर)
दिसंबर	स्पर्श –	अरुण कमल
	व्याकरण –	अलंकार
जनवरी	स्पर्श –	डायरी का एक पन्ना कबीर की साखी
फरवरी		पुनरावृत्ति

अपठित बोध, रचना तथा सतत् मूल्यांकन क्रमशः प्रत्येक माह करवाए जाएँगे।

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

अपठित गद्यांश

प्रश्न	निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिएः–
ट	जब मनुष्य जंगली था, वनमानुष जैसा, उसे नाखून की ज़रूरत थी। उसकी जीवन–रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे। असल में वही उसके अस्त्र थे। दाँत भी थे, पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था। उन दिनों उसे जूझना पड़ता था, प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ना पड़ता था, नाखून उसके लिए आवश्यक अंग था। फिर धीरे–धीरे वे अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा। पत्थर के ढेले और पेड़ की डाले काम में लाने लगा। मनुष्य और आगे बढ़ा। उसने धातु के हथियार बनाए। जिनके पास लोहे के अस्त्र और शस्त्र थे, वे विजयी हुए। इतिहास आगे बढ़ा। पलीते वाली बंदूकों ने, कारतूसों ने, तोपों ने, बमों ने, बमवर्षक वायुयानों ने इतिहास को किस कीचड़–भरे घाट तक घसीटा है यह सबको मालूम है। नख–धर मनुष्य अब एटम–बम पर भरोसा करके आगे की ओर चल पड़ा है। पर उसके नाखून अब भी बढ़ रहे हैं। अब भी प्रकृति मनुष्य को उसके भीतर वाले अस्त्र से वंचित नहीं कर रही है, अब भी वह याद दिला देती है कि तुम्हारे नाखून को भुलाया नहीं जा सकता। तुम वही लाख वर्ष पहले के नखदंतावलंबी जीव हो– पशु के साथ एक ही सतह पर विचरने वाले और चरने वाले।
क.	मनुष्य के लिए नाखून क्यों जरूरी थे?
प	शस्त्र बनाने के लिए
पप	अंगुलियों को सुंदर बनाने के लिए
पपप	अंगुलियों की सुरक्षा के लिए
पअ	जीवन–रक्षा के लिए
ख.	कुछ समय बाद मनुष्य किन बाहरी चीजों का सहारा लेने लगा?
प	पत्थर के ढेले व पेड़ की डाले।
पप	पत्थर के बर्तन व वृक्ष की जड़े।
पपप	नाखून से बने हथियारों।
पअ	जानवरों के दाँतों से बने हथियार।
ग.	मनुष्य अब किस पर भरोसा करके आगे की ओर चल पड़ा है?
प	परम पिता परमेश्वर पर
पप	एटम बम
पपप	वज्र
पअ	नाखून
घ.	प्रकृति मनुष्य को कौन–से अस्त्र से वंचित नहीं कर रही है?
प	वज्र
पप	तन
पपप	हस्त
पअ	नख

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

ड.	लेखक ने मनुष्य को कैसा जीव बताया है?
प	संघर्ष करने वाला जीव
पप	युद्ध करने वाला जीव
पपप	नखदंतावलंबी जीव
पअ	परजीवी जीव
प्प	'साँच बराबर तप नहीं' सूक्ति में सत्य की महत्ता को स्वीकारा गया है। सच के मार्ग पर चलना अपने–आप में तप है। तप का अर्थ है 'तपना'। सच का मार्ग सदैव कंटीला होता है, कठिन होता है। तप करने की ताकत रखने वाला ही इस पर चल सकता है। तप वही कर सकता है जिसका हृदय साफ़, निष्पाप व एकाग्रचित्त हो। 'सत्य' मानव हृदय के गौरव का प्रतीक है। सच बोलने वाले के मुख पर अलग तरह का तेज रहता है। ऐसा व्यक्ति निडर होता है व लोगों के दिल में जगह बनाता है। अप्रिय सत्य मनुष्य को कभी नहीं बोलना चाहिए। सत्य–असत्य की परिभाषा अपने–आप में कुछ नहीं, परंतु दूसरों की भलाई, कल्याण के लिए बोला गया बड़े–से–बड़ा झूठ भी सत्य है और वास्तविक सत्य जो दूसरों को कठिनाई में डाल दे, बोला जाए तो वह झूठ की परिधि में आता है। सत्य का पालन करने के लिए सत्यवादी हरिशचंद्र अपने पूरे जीवन को तपस्वी की तरह जीने पर मजबूर हुए। तप और सत्य मिलकर मानव जीवन को विकास की राह पर अग्रसर करते हैं। सत्य की प्राप्ति ही कठोरतम तप है। यह संसार का सर्वोत्तम धर्म है जिसके बिना जीवन सारहीन हो जाता है। सत्य अटल है। लाख झूठ भी उसके समक्ष टिक नहीं सकते। झूठ बुलबले की भाँति है जिसका अस्तित्व क्षणिक है। सच स्थायी है, चिरंतन है। एक सच को छुपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं और अंत में सौ झूठों का आवरण भेदकर सत्य बाहर निकल ही आता है। सत्य से व्यक्ति जितना मुँह मोड़ता है वह उतना पल–पल में सामने आता है। कठिन अवश्य है तप का मार्ग, सत्य का मार्ग, परंतु कल्याणकारी है।
क.	'सच' का मार्ग कैसा होता है?
पण	कंटीला और कमज़ोर
पपण	काँटों से भरा एवं सरल
पपपण	कंटीला और आसान
पअण	काँटों से भरा एवं कठिन
ख.	**तप कैसा व्यक्ति कर सकता है?**
पण	जिसका दिमाग एकाग्रचित्त, कुशाग्र एवं निष्पाप हो।
पपण	जिसका हृदय निष्पाप, एकाग्रचित्त एवं साफ़ हो।
पपपण	जिसका हृदय संयमी, सत्यवादी एवं निष्पाप हो।
पअण	जिसका दिमाग तीव्र, कुशाग्र एवं एकाग्रचित्त हो।
ग.	**सच बोलने वाले की क्या पहचान है?**
पण	निडर, साहसी एवं परोपकारी
पपण	निडर, परोपकारी एवं पक्षपात करने वाला
पपपण	पक्षपात न करने वाला, साहसी एवं कुशल वक्ता

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

पअण	निडर, सबका प्रिय एवं मुख पर विशेष तेज
घ.	**मानव जीवन के विकास की राह को आगे बढ़ाते हैं :**
पण	स्वास्थ्य और तप
पपण	सत्य और तप
पपपण	तप और संयम
पअण	संयम और सत्य
ङ.	**'सच' और 'झूठ' में क्या अंतर है?**
पण	झूठ एक बार बोलना पड़ता है और सच सौ बार।
पपण	सच बुलबुले की तरह क्षणिक है और झूठ चिरंतन व स्थायी है।
पपपण	झूठ बुलबुले की तरह क्षणिक है और सच चिरंतन व स्थायी है।
पअण	सच बोलने में खतरा अधिक होने पर झूठ बोलना सत्य ही कहलाता है।
	एक बार स्वामी विवेकानंद का एक शिष्य उनके पास आया और उसने कहा, ''स्वामी जी, मैं आप की तरह भारत की संस्कृति, दर्शन और रीति–रिवाज़ का प्रचार–प्रसार करने के लिए अमेरिका जाना चाहता हूँ। यह मेरी पहली यात्रा है। आप मुझे विदेश जाने की अनुमति और अपना आशीर्वाद दें ताकि मैं अपने मकसद में सफल होऊँ।'' स्वामी जी ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, फिर कहा, ''सोचकर बताऊँगा।'' शिष्य हैरत में पड़ गया। उसने विवकानंद जी से इस उत्तर की कल्पना भी नहीं की थी। उसने फिर कहा, ''स्वामी जी, मैं आपकी तरह सादगी से अपने देश की संस्कृति का प्रचार करूँगा। मेरा ध्यान और किसी चीज़ पर नहीं जाएगा।'' विवेकानंद ने फिर कहा, ''सोचकर बताऊँगा।'' शिष्य ने समझ लिया कि स्वामी जी उसे विदेश नहीं भेजना चाहते इसलिए ऐसा कह रहे हैं। वह उनके पास ही रुक गया। दो दिनों के बाद स्वामी जी ने उसे बुलाया और कहा, ''तुम अमेरिका जाना चाहते हो तो जाओ। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।'' शिष्य ने सोचा कि स्वामी जी ने इतनी छोटी–सी बात के लिए दो दिन सोचने में क्यों लगा दिए? उसने अपनी यह दुविधा स्वामी जी को बताई। स्वामी जी ने कहा, ''मैं दो दिनों में यह समझना चाहता था कि तुम्हारे अंदर कितनी सहनशक्ति है। कहीं तुम्हारा आत्म–विश्वास डगमगा तो नहीं रहा है। लेकिन तुम दो दिनों तक यहाँ रहकर निर्विकार भाव से मेरे आदेश की प्रतीक्षा करते रहे। न क्रोध किया, न जल्दबाज़ी की और न ही धैर्य खोया। जिसमें इतनी सहनशक्ति और गुरु के प्रति प्रेम का भाव होगा, वह शिष्य कभी भटकेगा नहीं। मेरे अधूरे काम को वही आगे बढ़ा सकता है। किसी दूसरे देश के नागरिक के मन में अपने देश की संस्कृति को अंदर तक पहुँचाने के लिए ज्ञान के साथ–साथ धैर्य, विवेक और संयम की आवश्यकता होती है। मैं इसी बात की परीक्षा ले रहा था।'' शिष्य स्वामी जी की इस अनोखी परीक्षा से अभिभूत हो गया।
क.	स्वामी जी के शिष्य का अमेरिका जाने का उद्देश्य था :
पण	अमेरिका की संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करना।
पपण	भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म का प्रचार करना।
पपपण	भारतीय धर्मों का प्रचार–प्रसार करना।

पअ	भारत की संस्कृति, दर्शन और रीति–रिवाज़ का प्रचार करना।
ख.	विवेकानंद जी ने शिष्य को अमेरिका जाने की अनुमति नहीं दी,क्योंकिः
प	शिष्य को भारतीय रीति–रिवाज़ों का ज्ञान नहीं था।
पप	शिष्य के धैर्य, विवेक और संयम की परीक्षा लेना चाहते थे।
पपप	शिष्य को ज्ञान देना चाहते थे।
पअ	शिष्य के पास पर्याप्त धन नहीं था।
ग.	विवेकानंद जी के उत्तर न देने पर शिष्य की प्रतिक्रिया थी :
प	क्रोध से भर गया।
पप	निर्विकार भाव से प्रतीक्षा करता रहा।
पपप	स्वामी जी से विनती करने लगा।
पअ	धैर्य खोकर विचलित हो गया।
घ.	शिष्य स्वामी जी के पास क्यों गया था?
प	अमेरिका जाने की अनुमति माँगने।
पप	ज्ञान–प्राप्त करने।
पपप	स्वामी जी की सेवा करने।
पअ	स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त करने।
ङ.	गद्यांश का उचित शीर्षक होगा :
प	स्वाभिमान की रक्षा
पप	धैर्य–परीक्षा
पपप	अनोखी परीक्षा
पअ	पहली परीक्षा
प्ट	कर्म में आनंद अनुभव करने वालों ही का नाम कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनंद भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फल स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और क्लेश का शमन करते हुए चित्त में जो उल्लास की पुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है। उसके लिए सुख तब तक के लिए रुका नहीं रहता जब तक कि फल प्राप्त न हो जाए, बल्कि उसी समय से थोड़ा–थोड़ा करके मिलने लगता है जब से वह कर्म की ओर हाथ बढ़ाता है। कभी–कभी आनंद का मूल विषय तो कुछ और रहता है, परंतु उस आनंद के कारण एक ऐसी स्फूर्ति उत्पन्न होती है जो बहुत से कामों की ओर हर्ष के साथ अग्रसर करती है। इसी प्रसन्नता और तत्परता को देख लोग कहते हैं कि वे काम बड़े उत्साह से कर रहा है। यदि किसी मनुष्य को बहुत–सा लाभ हो जाता है या उसकी कोई बड़ी भारी कामना पूर्ण हो जाती है तो जो काम उसके सामने आते हैं उन सबको वह बड़े हर्ष और तत्परता के साथ करता है। उसके इस हर्ष और तत्परता को भी लोग उत्साह ही कहते हैं। इसी प्रकार किसी उत्तम फल या सुख–प्राप्ति को आशा या निश्चय से उत्पन्न आनंद, फलोन्मुख प्रयत्नों के अतिरिक्त और दूसरे व्यापारों के साथ संलग्न होकर, उत्साह के रूप में दिखाई पड़ता है। यदि हम किसी ऐसे उद्योग में लगे हैं जिससे आगे चलकर हमें बहुत लाभ या सुख की आशा है तो हम उस उद्योग

	को तो उत्साह के साथ करते ही हैं, अन्य कार्यों में भी प्रायः अपना उत्साह दिखा देते हैं। यह बात उत्साह में नहीं, अन्य मनोविकारों में भी बराबर पाई जाती है। यदि हम किसी बात पर क्रुद्ध बैठे हैं और इसी बीच में कोई दूसरा आकर हमसे कोई बात सीधी तरह से पूछता है तो भी हम उस पर झुंझला उठते हैं। इस झुंझलाहट का न तो कोई निर्दिष्ट कारण होता है, न उद्देश्य। यह केवल क्रोध की स्थिति के व्याघात को रोकने की क्रिया है, क्रोध की रक्षा का प्रयत्न है। इस झुंझलाहट द्वारा हम प्रकट करते हैं कि हम क्रोध में हैं और क्रोध में ही रहना चाहते हैं। क्रोध को बनाए रखने के लिए हम उन बातों से भी क्रोध ही संचित करते हैं जिनसे दूसरी अवस्था में हम विपरीत भाव प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार यदि हमारा चित्त किसी विषय में उत्साहित रहता है तो हम अन्य विषयों में भी अपना उत्साह दिखा देते हैं।
क	लेखक ने कर्मण्य किसे कहा है?
प	कर्म करने की शक्ति को।
पप	कर्म में आनंद का अनुभव करने वालों को।
पपप	कर्म में विश्वास करने वाले को।
पअ	कर्म को जीवन का हिस्सा मानने वाले को।
ख	उनके लिए सुख कब तक रुका नहीं रहता?
प	जब तक फल प्राप्त न हो जाए।
पप	जब तक कर्म संसार से जुड़ न जाए।
पपप	जब तक कर्म करते हुए थक न जाए।
पअ	जब तक सुख मन को छू न ले।
ग	लोग उत्साह किसे कहते हैं?
प	जिसको करके सुख की प्राप्ति हो।
पप	स्फूर्ति का आधार है उत्साह।
पपप	जो मन को संतुष्टि दे।
पअ	बहुत–सा लाभ या भारी कामना की पूर्ति से उत्पन्न हर्ष और तत्परता को।
घ	हम किस उद्योग को उत्साह के साथ करते हैं?
प	जिससे आगे चलकर हमें बहुत लाभ या सुख की आशा हो।
पप	जिससे आगे चलकर संतुष्टि मिले।
पपप	जिससे परिश्रम कम करना पड़े।
पअ	जिसमें उज्ज्वल भविष्य छिपा हो।
ङ	झुंझलाहट द्वारा हम क्या प्रकट करते हैं?
प	अकुलाहट का भाव।
पप	दूसरे के प्रति अनादर का भाव।
पपप	हम क्रोध में हैं और क्रोध में ही रहना चाहते हैं।
पअ	मन की साधारण अवस्था को दूसरों से छिपाना चाहते हैं।
ट	दुर्निवार संतान प्रवाह के कारण ही पीपल अश्वत्थ कहा जाता है। श्वत्थ का अर्थ है कल तक रहने वाले, अवश्वत्थ का अर्थ है जो कल की परंपरा के

THE CIVIL SERVICES SCHOOL

	बाहर अक्षय हो। यही कारण है कि हमारी संस्कृति में पीपल जीवन तरु है। वह जीवन–मरण, हर्ष–विवाद, राग–विराग, सबमें बहुत बड़ा आश्वासन है। वह एक ओर मन की चंचलता को पत्तियों के बहाने दिग्दर्शित करता है, वहीं दूसरी ओर अपनी जड़ो के विस्तार के द्वारा आतुर की अनश्वरता भी दिग्दर्शित करता है। एक ओर वह सत्य का भरोसा देता है, यहाँ आकर कोई झूठ नहीं बोलेगा, दूसरी ओर भय देता है। अदृश्य सत्ताएँ भी यहाँ हैं, वे कुछ नहीं, तुम्हारे भीतर के असत्य हैं, जिनका तुम्हें यहाँ आते ही एहसास होने लगता है। एक ओर पीपल पूरा–का–पूरा सामने है, विशाल छायादार वृक्ष, दूसरी ओर वह उतना ही अदृश्य विशाल भीतर दूर तक चला गया है। पीपल यदि गाँव में न हो तो उस गाँव की शोभा घट जाती है। पीपल की छाँह में कितना बड़ा परिवार और उससे भी बड़ा परिवार–भाव पलता है। इसके बावजूद पीपल कितना निस्संग है। कितना अकेला है, कितना विरागी है, कितना उसने देखा है, कितना उसने झेला है। कितनी बार मदमाते हाथियों से अधिक मदमाते उनके पीलवानों ने उनकी डालें छिनगाई हैं, कितनी बार बकरियों के पालने वालों ने उसकी पत्तियों के संसार को बेरहमी से उजाड़ा है, कितने बेदर्द मौसम उसने झेले हैं और वह अनासक्त वैसे ही खड़ा है, कितनी पीढ़ियाँ उसकी आँखों के सामने गुज़री हैं, सबका सुख–दुख, संपत्ति–विपत्ति देखते–देखते वह इतना काठ हो गया है, बस जीवन का सहज छंद वह अपनी पत्तियों की थिरकन के द्वारा पढ़ता रहता है। पढ़ता क्या गुनगुनाता रहता है, जीवन यही है, थोड़ा–सा सुख, ढेर सारा दुख। पर इससे भी ज़्यादा जीने की चाह, अकेले न जी पाएँ, तो साझे की तरह, साझे में धोखा खाए तो भी साझे की तड़पन, हज़ार–हज़ार पक्षियों का कलरव, दुपहरी का सन्नाटा, रात की भयावह शांति, सुबह–शाम की हलचल, एकाएक तरुणाई का प्यार, फिर एकाएक अपने ही पत्तों का छोड़–छोड़कर दूर–दूर भागना, जाड़े का कुहरा, पतझड़ की मार, वसंत का प्यार, निदाघा की स्निग्धता, वर्षा का हर्ष, यही तो जीवन है।
क	अश्वत्थ का क्या अर्थ है?
प	कल तक रहने वाला।
पप	अश्व पर आरूढ़।
पपप	जो काल की परंपरा के बाहर अक्षय हो।
पअ	जिसका प्रवाह निरंतर हो।
ख	पीपल को जीवन–तरु क्यों कहा गया है?
प	इसमें दुर्निवार संतान प्रवाह है।
पप	वह जीवन–मरण, हर्ष–विषाद, राग–विराग, सबमें बड़ा आश्वासन है।
पपप	यह हमारी संस्कृति से जुड़ा हुआ है।
पअ	यह विपरीत भाव प्रकट करने में समर्थ है।
ग	अदृश्य सत्ताएँ लेखक ने किसे कहा है?
प	भीतर के असत्य को।
पप	सत्य के भरोसे को।
पपप	पीपल की पत्तियों की छाया को।

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

पअ	जड़ों के विस्तार को।
घ	पीपल को लेखक ने निस्संग क्यों कहा है?
प	उसकी पत्तियों के संसार को बेरहमी से उखाड़ा है।
पप	क्योंकि उसने अनेक बेदर्द मौसम झेले हैं।
पपप	उसने बहुत कुछ देखा है और झेला है।
पअ	परिवार–भाव उसके अंदर पलने पर भी वह अकेला और विरागी है।
ङ	पीपल पत्तियों की थिरकन द्वारा क्या पढ़ता और गुनगुनाता रहता है?
प	जीवन के सुख–दुख, संपत्ति–विपत्ति।
पप	थोड़ा–सा सुख ढेर–सा दुख।
पपप	जीवन का सहज छंद
पअ	साझे का तड़पन।
टए	जब व्यक्ति अपने आपको नहीं देख पाता, तब हज़ारों समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। इनका कहीं अंत नहीं आता। गरीबी की समस्या हो या मकान और कपड़े की समस्या हो या अन्य समस्याएँ हों, वे सारी की सारी गौण समस्याएँ हैं, मूल समस्या नहीं है। ये पत्तों की समस्याएँ हैं, जड़ की नहीं हैं। पत्तों का क्या? पतझड़ आता है, सारे पत्ते झड़ जाते हैं। बसंत आता है और सारे पत्ते आ जाते हैं, वृक्ष हरा–भरा हो जाता है। यह मूल समस्या नहीं है। मूल समस्या है कि व्यक्ति अपने–आपको नहीं देख पा रहा है। उसके पीछे ये पाँच कारण या समस्याएँ काम कर रही हैं। पहली मिथ्या दृष्टिकोण, दूसरी असंयम, तीसरी प्रमाद, चौथी कषाय, पाँचवीं चंचलता। जैन दर्शन ने बताया कि मूल समस्याएँ ये पाँच हैं। यही वास्तव में दुख है। यही दुख का चक्र है। जब तक इस दुख के चक्र को नहीं तोड़ा जाएगा, तब तक जो सामाजिक, मानसिक और आर्थिक समस्याएँ हैं, उनका सही समाधान नहीं हो पाएगा। एक प्रश्न है कि आदमी करोड़पति है, अरबपति है। वह अप्रामाणिक और अनैतिक व्यवहार करता है। क्या वह बुराई गरीबी के कारण करता है? अभाव के कारण करता है? रोटी–रोज़ी के लिए करता है? गरीब आदमी इतना अनैतिक नहीं होता, जितना अनैतिक एक धनी और अमीर आदमी होता है। समस्या धन की नहीं है। समस्या लोभ की है। यह सबसे बड़ी समस्या है। इसका समाधान नहीं खोजा जाता। समाधान खोजा जाता है गरीबी का। वह सभी समाप्त नहीं होती। कुछ लोग बहुत धनी हो जाते हैं और कुछ अत्यधिक गरीब रह जाते हैं। जब पहाड़ है तो गड्ढा भी अवश्य होगा। ऊँचाई है तो निचाई भी होगी। सर्वत्र समतल हो नहीं सकता? यह असंभव नहीं है। पर जब तक मूल समस्या पर ध्यान नहीं जाता, तब तक समस्या का समाधान नहीं मिल सकता।
क	कौन–कौन सी गौण समस्याएँ हैं?

ख	पतझड़ आने पर क्या होता है?
	सर्दी पड़ती है।
	फूल झड़ते हैं।
	फल गिरते हैं।
	पत्ते झड़ते हैं।
ग	किन पाँच प्रमुख समस्याओं का वर्णन किया गया है?
	दृष्टिकोण, असयंम, धन का लालच, चंचलता, कषाय।
	दृष्टिकोण, असयंम, प्रमाद, चंचलता, कषाय।
	दृष्टिकोण, असयंम, प्रमाद, चंचलता, गरीबी।
	दृष्टिकोण, असयंम, प्रमाद, अनैतिकता, गरीबी।
घ	उपरोक्त गद्यांश में अनैतिकता का प्रमुख कारण किसे बताया गया है?
	गरीबी
	अज्ञानता
	निरक्षरता
	लोभ
ङ	उपरोक्त गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है :
	अनैतिक व्यवहार
	दृष्टिकोण
	जैन दर्शन
	मूल समस्याएँ।
टप्प	बातचीत का भी एक विशेष प्रकार का आनंद होता है। जिनको इस आनंद को भोगने की आदत पड़ जाती है वे इसके लिए अपना खाना–पीना तक छोड़ देते हैं, अपना और नुकसान कर लेते हैं, लेकिन बातचीत से प्राप्त आनंद को नहीं खोना चाहते। जिनसे केवल पत्र–व्यवहार है, कभी एक बार भी साक्षात्कार नहीं हुआ, उन्हें अपने प्रेमी से बात करने की अत्यधिक लालसा रहती है। अपने मन के भावों को दूसरों के सम्मुख प्रकट करने की और दूसरों के अभिप्राय को स्वयं ग्रहण करने का एकमात्र साधन शब्द ही है। बेन जानसन का यह कथन उचित प्रतीत होता है कि "बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है।" बातचीत की सीमा दो से लेकर वहाँ तक रखी जा सकती है जितनों की जमात, मीटिंग या सभा न समझ ली जाए। एडिसन का मत है कि असल बातचीत सिर्फ़ दो में ही हो सकती है। जब तीन हुए तब वह दो की बात कोसों दूर चली जाती है। चार से अधिक की बातचीत केवल राम–रमौवल कहलाती है। इसलिए जब दो आदमी परस्पर बैठे बातें कर रहे हों, यदि तीसरा वहाँ आ जाए तो वे दोनों निरस्त बैठ जाते हैं या फिर तीसरे को निपट मूर्ख और अज्ञानी समझ बनाने लगते हैं। इस बातचीत के अनेक भेद हैं। दो बुड्ढों की बातचीत प्रायः ज़माने की शिकायत पर हुआ करती है। नौजवानों की बातचीत का विषय जोश, उत्साह,

	नई उमंग, नया हौसला आदि होता है। पढ़े–लिखे लोगों की बातचीत का विषय प्रसिद्ध विद्वान, विचारक और उनके विचार होते हैं। खिलाड़ियों की बातचीत का विषय खेल–चर्चा तथा अधेड़ आयु की स्त्रियों का मुख्य विषय अपनी बहू–बेटी का गिला–शिकवा या पास–पड़ौस की चर्चा होती है। स्कूल के लड़कों की बातचीत का उद्देश्य अपने गुरुजनों की प्रशंसा या निंदा अथवा अपने सहपाठियों के गुण–दोषों आदि का वर्णन करना होता है।
क	बातचीत की आदत का असर होता है कि :
	लोग अपना नुकसान कर लेते हैं।
	खाना–पीना छोड़ देते हैं।
	आनंद उठाते हैं।
	उपरोक्त सभी।
ख	अपने मन के भाव दूसरे के सामने प्रकट करने का एकमात्र साधन है :
	साक्षात्कार
	पत्र–व्यवहार
	मीटिंग
	शब्द
ग	असली बातचीत कब हो सकती है?
	दो लोगों के बीच
	तीन लोगों के बीच
	चार लोगों के बीच
	चार से अधिक लोगों के बीच
घ	बेन जानसन ने क्या माना है?
	बात दो लोगों के बीच होती है।
	बात करने वाले मूर्ख होते हैं।
	बोलने से मनुष्य रूप का साक्षात्कार होता है।
	बात करने से सुख मिलता है।
ङ	उपरोक्त गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है :
	बातचीत
	बातचीत की सीमा
	बातचीत : एक कला
	बातचीत के भेद
टप्प्	आज लगता है कि संयुक्त परिवार का विघटन शायद अवश्यंभावी हो गया। आज हमारा समाज बदल गया है, आजीविका के आधार बदल गए हैं, सोच का तरीका बदल गया है। माता–पिता और गुरु के प्रति आदर और श्रद्धा क्यों और कहाँ लुप्त हो गए? आखिर माँ–बाप और संतान का रिश्ता तो वैसा ही है, जैसा शिष्य और आचार्य का संबंध। उत्तरवर्ती पीढ़ी पूर्ववर्ती पीढ़ी को और उनकी सोच को बेकार कहकर अपने से बड़ों का तिरस्कार करे यह अपसंस्कृति का उदाहरण है। जो व्यक्ति अपने माँ–बाप और गुरु को आदर नहीं दे पाता, कल उसे भी आदर नहीं मिलेगा। शादी–ब्याह माँ–बाप

	की आज्ञा–अनुमति से ही हो, यह जरूरी नहीं है, न यह उचित है कि युवकों और युवतियों के बीच सहज आकर्षण पर सामाजिक या सरकारी पुलिस बैठाई जाए। इस प्रकार अब तक सास–बहू के कलह में अकसर सास का दोष देखने के आदी प्रगतिवादी लोग भी अब बहू के द्वारा सास के तिरस्कार को देखकर तिलमिला उठते हैं। बीते ज़माने में सास का कठोर अनुशासन और बहू का विनय दिखाई देता था। अब सास निरीह होती जा रही है और कई बहुएँ दुर्विनीत और उददंड व्यवहार करती हैं। दोष केवल बहू का ही नहीं, बेटे का भी होता है; बल्कि बेटे का ज़्यादा। वस्तुतः मर्यादा, विवेक और शालीनता, सम्यक शिष्टाचार के साथ एक संतुलित समीकरण की ओर ले जाना आवश्यक हो गया है। अन्यथा जिन पारंपरिक–पारिवारिक मूल्यों का हम गर्व से उद्घोष करते रहे हैं, वे प्रदूषित होकर विनष्ट हो जाएँगे। क्या सही है, और क्या गलत, उनके बीच सीमा–रेखा खींचते हुए यह विचारणीय और वांछनीय है कि हमारी प्रगति, समृद्धि और शिक्षा अपसंस्कृति का वाहन और माध्यम न बने।
क	**आज क्या लुप्त हो गया है?**
ख	**कौन–सी पीढ़ी किसकी सोच को बेकार कहती है?**
ग	**प्रगतिवादी लोग भी किसे देखकर तिलमिला उठते हैं?**
घ	**लेखक ने किसका दोष ज़्यादा माना है?**
ङ	**लेखक ने क्या विचारणीय माना है?**

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

उपसर्ग–प्रत्यय

प्रश्न	निम्नलिखित उपसर्गों से दो–दो शब्द बनाइएः–
1	अधि –
2	परि –
3	पुरा –
4	स –
5	कु –
6	अन –
7	अध –
8	ऐन –
9	नि –
10	अल –
11	बे –
12	हम –
13	दुर् –
14	प्र –
15	स्व –
16	प्रति –
17	बिल –
18	वि –
19	खुश –

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

20	अव –
21	भर –
22	गैर –
23	हर –
24	अप –
25	न –
प्रश्न	**निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग तथा मूल शब्द पृथक कीजिए:–**
1	प्राक्कथन –
2	सजीव –
3	कुपुत्र –
4	हमदर्दी –
5	भरपेट –
6	प्रदर्शन –
7	अंतर्मन –
8	खुशकिस्मत –
9	पराजय –
10	अनमोल –
11	प्रभाव –
12	परिक्रमा –
13	गैरकानूनी –
14	नालायक –
15	प्रफुल्लता –
16	सपूत –
17	कुकर्म –
18	खुशदिल –

SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

19	कमउम्र –
20	स्वतंत्र –
21	अलिप्त –
22	नीरोग –
23	सहचर –
24	नास्तिक –
25	अनमोल –
प्रश्न	**निम्नलिखित शब्दों में से सही उपसर्ग छाँटकर लिखिएः–**
1	**'असंख्य' शब्द में उपसर्ग है :**
प	अ
पप	स
पपप	अस्
पअ	सम
2	**'परिवर्तन' शब्द में उपसर्ग है :**
प	प्र
पप	परि
पपप	प्रति
पअ	पर
3	**'विदेशी' शब्द में उपसर्ग है :**
प	वि
पप	विद्
पपप	इ
पअ	ई
4	**'प्रवचन' शब्द में उपसर्ग है :**
प	परि
पप	पर
पपप	प्र
पअ	निस्
5	**'बेचारा' शब्द में उपसर्ग है :**
प	ब
पप	बे
पपप	आ
पअ	रा
प्रश्न	**निम्नलिखित प्रत्यय से दो–दो नए शब्द लिखिएः–**

विद्या च विमुच्यते SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

1	अक –
2	अक्कड़ –
3	आकू –
4	आवट –
5	औती –
6	आहट –
7	ची –
8	मंद –
9	दान –
10	दानी –
11	खोर –
12	गीरी –
13	खाना –
14	तम –
15	नीय –
16	एरा –
17	ना –
18	आपा –
19	हार –
20	ईला –
21	कार –
22	आनी –
23	त्व –
24	इक –
25	ई –

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL विद्यया च विमुच्यते

प्रश्न	निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय तथा मूल शब्द अलग–अलग करके लिखिएः–
1	तैराक –
2	फलित –
3	स्थिरता –
4	दैनिक –
5	पौराणिक –
6	ओढ़ना –
7	भिडंत –
8	पियक्कड़ –
9	बसेरा –
10	घबराहट –
11	बुढ़ापा –
12	पालनहार –
13	धार्मिक –
14	रंगीला –
15	देवत्व –
16	पत्रकार –
17	पीलापन –
18	बुराई –
19	फिरौती –
20	दिखावा –
21	घटती –
22	धनवान –
23	जेठानी –
24	सांप्रदायिक –

विद्या च विमुच्यते SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

25	कमेरा –
प्रश्न	**निम्नलिखित शब्दों में से सही प्रत्यय छाँटकर लिखिएः–**
1	**'भौतिकी' शब्द में प्रत्यय है :**
प	इ
पप	की
पपप	ई
पअ	इकी
2	**'परिचित' शब्द में प्रत्यय है :**
प	ई
पप	ता
पपप	इत
पअ	ईत
3	**'फिल्मी' शब्द में प्रत्यय है :**
प	ई
पप	ईन
पपप	इत
पअ	इ
4	**'सहनशीलता' शब्द में प्रत्यय है :**
प	इत
पप	त्व
पपप	आ
पअ	ता
5	**'देवत्व' शब्द में प्रत्यय है :**
प	त्व
पप	इत
पपप	ता
पअ	अक
6	**'चलाऊ' शब्द में प्रत्यय है :**
प	इक
पप	आऊ
पपप	लाऊ
पअ	लाउ
7	**'शिक्षक' शब्द में प्रत्यय है :**
प	इक
पप	अक
पपप	क
पअ	क्षक
8	**'बड़प्पन' शब्द में प्रत्यय है :**
प	अन्

पप	पन
पपप	प
पअ	आ
9	**‘रंगी’ शब्द में प्रत्यय है :**
प	गी
पप	इ
पपप	इक
पअ	ई
10	**‘उपकारक’ शब्द में प्रत्यय है :**
प	कारक
पप	क
पपप	अक
पअ	रक

विलोम शब्द

प्रश्न	**निम्नलिखित के विलोम लिखिए:–**
1	अनंत –
2	अनुकूल –
3	अल्प –
4	अनाथ –
5	अनुज –
6	अनुराग –
7	अमृत –
8	आदर –
9	आदि
10	अनिवार्य –
11	आज्ञा –
12	आधुनिक –
13	आस्तिक –

14	उत्थान –
15	उपकार –
16	ऋणी –
17	कर्कश –
18	कृतज्ञ –
19	गुप्त –
20	गुरु –
21	घृणा –
22	जाग्रत –
23	तरुण –
24	द्वैत –
25	नवीन –
26	पालन –
27	यश –
28	प्रीति –
29	प्रत्यक्ष –
30	बंधन –
31	मरण –
32	वादी –
33	विधवा –
34	संयोग –
35	सशस्त्र –
36	सुमति –
37	सृष्टि –
38	हानि –

विद्यया च विमुच्यते SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

39	हित –
40	ज्ञान –
प्रश्न	**निम्नलिखित शब्दों में से सही विलोम रूप छाँटकर लिखिएः–**
1	**'निशांत' शब्द का विलोम रूप है :**
प	दिनांत
पप	अनिशांत
पपप	अशांत
पअ	सुनिशांत
2	**'तटस्थ' शब्द का विलोम रूप है :**
प	अंतस्थ
पप	अंतरस्थ
पपप	पक्षधर
पअ	मध्यस्थ
3	**'अनुराग' शब्द का विलोम रूप है :**
प	पराग
पप	विराग
पपप	निराग
पअ	सुराग
4	**'अवरोह' शब्द का विलोम रूप है :**
प	विछोह
पप	आरोहण
पपप	आरोह
पअ	विरह
5	**'आर्य' शब्द का विलोम रूप है :**
प	प्रकार्य
पप	अनार्य
पपप	कार्य
पअ	सुकार्य
6	**'पतिव्रता' शब्द का विलोम रूप है :**
प	कुलटा
पप	सावित्री
पपप	सुहागन
पअ	कुलदेवी
7	**'बली' शब्द का विलोम रूप है :**
प	बलवान
पप	निर्बल
पपप	सबल

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL विद्या च विमुच्यते

पअ	अबला
8	**'भलाई' शब्द का विलोम रूप है :**
प	अच्छाई
पप	नीचता
पपप	बुराई
पअ	बदनामी
9	**'उदार' शब्द का विलोम रूप है :**
प	देवदार
पप	केदार
पपप	अनुदार
पअ	विदार
10	**'पौर्वात्य' शब्द का विलोम रूप है :**
प	आपात
पप	सुपात्र
पपप	निपात
पअ	पाश्चात्य

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

पर्यायवाची शब्द

प्रश्न निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची लिखिएः–

1 अपमान –

2 अभिमान –

3 ईश –

4 इच्छा –

5 उत्थान –

6 उपवन –

7 काम –

8 वसुधा –

9 प्रीति –

10 पुष्प –

11 बाग –

12 ब्राह्मण –

13 भाग्य –

14 केसरी –

15 स्त्री –

16 हृदय –

17 वृक्ष –

18 दुनिया –

19 शत्रु –

20 यमराज –

21 कृषक –

22 कष्ट –

23 काया –

विद्यया च विमुच्यते SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

24 किरण –

25 अग्नि –

26 भवन –

27 सुगंध –

28 सूर्य –

29 पत्नी –

30 मछली –

31 राक्षस –

32 लक्ष्मी –

33 मुख –

34 ध्वज –

35 भूधर –

36 जननी –

37 महादेव –

38 समुद्र –

39 बादल –

40 पक्षी –

प्रश्न निम्नलिखित शब्दों में से सही पर्यायवाची छाँटकर लिखिए:–

1 'पक्षी' शब्द का पर्यायवाची है :

प नभ
पप अज
पपप विहग
पअ घोटक

2 'वर्ष' शब्द का पर्यायवाची है :

प शब्द
पप अब्द
पपप बरस
पअ साल

3 'अग्नि' शब्द का पर्यायवाची है :

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

प पावक
पप तम
पपप कानन
पअ सरोज

4 'आज्ञा' शब्द का पर्यायवाची है :

प मानना
पप बात
पपप निर्देश
पअ मामला

5 'कृषक' शब्द का पर्यायवाची है :

प सुरेंद्र
पप खेतिहर
पपप मेहमान
पअ खेती

6 'दुग्ध' शब्द का पर्यायवाची है :

प नीर
पप वारि
पपप तोय
पअ क्षीर

7 'ध्वजा' शब्द का पर्यायवाची नही है :

प केतु
पप पताका
पपप विजय
पअ ध्वज

8 'नदी' शब्द का पर्यायवाची नही है :

प सलिला
पप सरिता
पपप ताल
पअ तरंगिणी

9 'पवन' शब्द का पर्यायवाची है :

प जलद
पप सुमन
पपप मारुत
पअ भ्रमर

10 'नाश' शब्द का पर्यायवाची नही है :

प ध्वंस
पप विनाश
पपप तबाही
पअ युद्ध

विद्यया च विमुच्यते SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

दुख का अधिकार

प्रश्न –1. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिएः–
बाज़ार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूज़े डलिया में और कुछ ज़मीन पर बिक्री के लिए रखे जान पड़ते थे। खरबूज़ों के समीप एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी। खरबूज़े बिक्री के लिए थे, परंतु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता? खरबूज़ों को बेचनेवाली तो कपड़े से मुँह छिपाए सिर को घुटनों पर रखे फफक–फफककर रो रही थी।

पड़ोस की दुकानों के तख्तों पर बैठे या बाज़ार में खड़े लोग घृणा से उसी स्त्री के संबंध में बात कर रहे थे। उस स्त्री का रोना देखकर मन में एक व्यथा–सी उठी, पर उसके रोने का कारण जानने का उपाय क्या था? फुटपाथ पर उसके समीप बैठ सकने में मेरी पोशाक ही व्यवधान बन खड़ी हो गई।

क. पाठ एवं लेखक का नाम बताइए।

ख. बाज़ार में लोग क्या कर रहे थे?

ग. कोई खरबूज़ों को खरीदने के लिए आगे क्यों नहीं बढ़ रहा था?

घ. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?

ङ. लेखक स्त्री के रोने का कारण क्यों न जान सका?

विद्यया विमुच्यते SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

प्र. ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी–ककना ही क्यों न बिक जाएँ।

भगवाना परलोक चला गया। घर में जो कुछ चूनी–भूसी थी सो उसे विदा करने में चली गई। बाप नहीं रहा तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे। दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूज़े दे दिए लेकिन बहू को क्या देती? बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअन्नी–चवन्नी भी कौन उधार देता।

बुढ़िया रोते–रोते और आँखें पोंछते–पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूज़े डलिया में समेटकर बाज़ार की ओर चली–और चारा भी क्या था?

ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी–ककना ही क्यों न बिक जाएँ।

भगवाना परलोक चला गया। घर में जो कुछ चूनी–भूसी थी सो उसे विदा करने में चली गई। बाप नहीं रहा तो क्या, लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे। दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूज़े दे दिए लेकिन बहू को क्या देती? बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअन्नी–चवन्नी भी कौन उधार देता।

बुढ़िया रोते–रोते और आँखें पोंछते–पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूज़े डलिया में समेटकर बाज़ार की ओर चली–और चारा भी क्या था?

गरीबी में मृत्यु का होना भी एक समस्या क्यों बन जाती है?

भगवाना के मरने के तुरंत बाद ही बुढ़िया को खरबूज़े बेचने क्यों जाना पड़ा?

बुढ़िया को कोई उधार क्यों नहीं देगा?

'चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी–ककना ही क्यों न बिक जाएँ' – ऐसा क्यों कहा जा रहा है?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–

दुख तो एक भाव है, सभी दुखी होते हैं, फिर इस पाठ को लिखने का उद्देश्य क्या रहा होगा?

THE CIVIL SERVICES SCHOOL

दूसरों के दुख को देखकर समाज के लोग आमतौर पर क्या प्रतिक्रिया करते हैं?

रहीम के दोहे

प्रश्न –1. निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिए:–

i
नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
ते रहीम पशु ते अधिक, रीझेहु कछु न देत।।
बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।

1 मृग नाद को सुनकर अपने प्राण क्यों त्याग देता है?
क. क्योंकि मृग को नाद नहीं भाता
ख. क्योंकि मृग नाद का आदी हो गया है
ग. क्योंकि नाद मृग को उसके पूर्वजन्म की याद दिलाता है और वह शोक से मर जाता है।
घ. क्योंकि मृग नाद से प्रसन्न होकर बधिक के जाल में फँस जाता है

2 कुछ लोग किसके बदले अपने प्राणों की आहुति दे देते हैं?
क. धन
ख. पुष्प
ग. प्यार
घ. क्रोध

3 दोहे के आधार पर कवि ने किन लोगों को पशुओं से भी अधिक गया–बीता कहा है?
क. जो पशुओं को जान से मार देते हैं
ख. जो किसी से प्रसन्न होकर भी उन्हें कुछ नहीं देते
ग. जो सबकी मदद एवं सेवा करते हैं
घ. जो बुराई का साथ देते हैं

4 लाख प्रयत्न करने पर भी बिगड़ी बात क्यों नहीं बन सकती?
क. क्योंकि उसे बनानेवाला कोई नहीं होता
ख. क्योंकि टूटे हुए रिश्ते में फिर से पहले जैसी मिठास नहीं आती
ग. क्योंकि जब चूड़ी टूट जाती है वह फिर से पहनी नहीं जा सकती
घ. क्योंकि अगर एक बार दूध फट जाए तो वह मथा नहीं जा सकता

5 लाख प्रयत्न करने पर भी क्या बनना मुश्किल है?
क. खिचड़ी
ख. अच्छा व्यक्ति
ग. बिगड़ी बात
घ. हिंदुस्तानी

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

ii
रहिमन निज संपत्ति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सकै बचाय।।

1 कवि के अनुसार किसके बिना विपत्ति टल नहीं सकती?
क. खान–पान के बिना
ख. लड़ाई–झगड़े के बिना
ग. धन–संपत्ति के बिना

घ. मान—सम्मान के बिना

2 निम्नलिखित शब्दों में से 'जलज' किसका पर्याय है?

क. सूर्य

ख. वर्षा

ग. कमल

घ. नयन

3 जलज को अकेला रवि क्यों नही बचा सकता?

क. अकेला रवि जलज को बचाने के लिए काफ़ी नहीं है।

ख. जलज को रवि और जल दोनों की आवश्यकता होती है।

ग. जलज को बचाने के लिए कई रवियों की ज़रूरत होती है।

घ. जलज की इच्छा ही नहीं होती बचने की।

4 निम्नलिखित में से रवि का पर्यायवाची शब्द कौन—सा है?

क. कुसुम

ख. यामिनी

ग. पंकज

घ. भास्कर

5 'निज संपत्ति' का धन के अतिरिक्त एक अर्थ और हो सकता है————

क. अपना जहान

ख. अपना जल

ग. अपना स्थान

घ. अपने गुण

प्रश्न —2ण निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः—

क. कवि ने सुई और तलवार का प्रयोग किस संदर्भ में किया है?

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

अनुस्वार और अनुनासिक

प्रश्न - सही स्थान पर अनुस्वार तथा अनुनासिक लगाइए -

1. पूछ -
2. मुह -
3. नीव -
4. दूगा -
5. घूघट -
6. तुम्हे -
7. सकल्प -
8. यत्र -
9. स्वय -

10. इसान -

11. सगठन -

12. सपत्ति -

13. नापसद -

14. अखड -

15. सपूर्ण -

16. सभव -

17. स्वच्छद -

18. आकाक्षा -

19. ऊट -

20. पकज -

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL

21. पाच -

22. चाद -

23. सस्थान -

24. स्वतत्र -

25. कुआ -

प्रश्न - निम्नलिखित शब्दों में सही स्थान पर अनुस्वार और अनुनासिक लगाइए -

1. सकंल्प -

2. हसँना -

3. गेदँ -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

4. अतंर -

5. सँचयन -

6. सशंय -

7. ठडं -

8. सुँदर -

9. धधाँ -

10. चँबा -

11. गभीरं -

12. व्यजंन -

13. हँस (पक्षी) -

14. सबंधं -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

15. सन्यासी -

16. सँयुक्त -

17. ससार -

18. अँग -

19. बिदुँ -

20. सँस्कार -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

शब्द - विचार

प्रश्न - निम्नलिखित श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए -

1. अनल - अनिल

2. अपेक्षा - उपेक्षा -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

3. अनु - अणु

4. कंगाल - कंकाल -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

5. द्वीप-द्विप -

6. प्रसाद- प्रासाद -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

7. बेर-बैर -

8. पानी-पाणि -

9. दिन-दीन -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

10. हरि-हरी -

11. कुल-कूल -

12. आदि-आदी -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

13. नारी-नाड़ी -

14. आसन-आसन्न -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

15. कलि-कली -

16. अली-अलि -

17. शर-सर -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

18. वास-बास -

19. बदन-वदन -

20. सुत-सूत -

विद्यया च विमुच्यते
SANSKRITI
THE CIVIL SERVICES SCHOOL

प्रश्न - 2. रिक्त स्थानों में उचित श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द भरिए -

1. ____________ की दशा अनुकूल होते ही हमने नए __________ में प्रवेश किया।

(क) ग्रह, गृह (ख) गृह, ग्रह (ग) गई, ग्रह

2. यहाँ के लोग संकटों, परेशानियों, मुसीबतों _________ के ___________ हैं।

(क) आदी, आदि (ख) आदी, अदि (ग) आदि, आदी

3. _________ जन सबकी _________ लेते हैं।

(क) सुधि, सुधी (ख) सूधी, सूधि (ग) सुधी, सुधि

4. _________ लोगों का अपनी _________ पर नियंत्रण नहीं होता।

(क) जवान, ज़बान (ख) ज़बान, जवान (ग) जोबन, जवान

5. मैं _________ पक्ष में पेंटिग करना सीखूँगा तभी _________ भी दूँगा।

(क) शुक्ल, शुल्क (ख) शुल्क, शुक्ल (ग) शुलक, शुकल

SANSKRITI THE CIVIL SERVICES SCHOOL